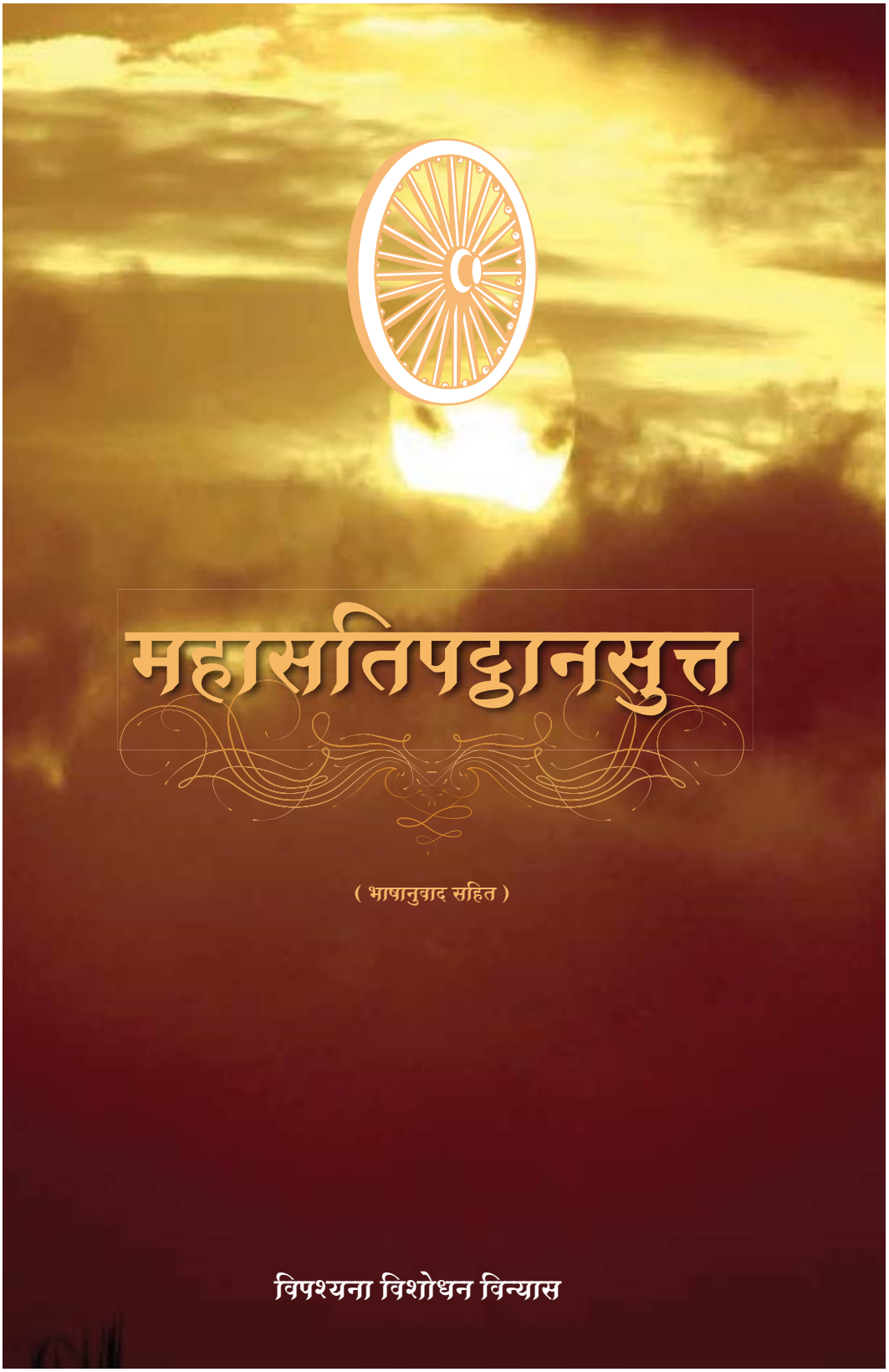
महासतिपट्ठानसुत्त
(भाषानुवाद सहित)
विपश्यना विशोधन विन्यास

महासतिपट्ठानसुत्त

(भाषानुवाद सहित)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

विषय-सूची

महासतिपट्ठानसुत्तं – मूल पाठ २

उद्देसो २

कायानुपस्सना आनापानपर्व ४

कायानुपस्सना इरियापथपब्बं ६

कायानुपस्सना सम्पजानपब्बं ६

कायानुपस्सना पटिकूलमनसिकारपब्बं ८

कायानुपस्सना धातुमनसिकारपब्बं १०

कायानुपस्सना नवसिवथिकपब्बं १२

वेदनानुपस्सना १६

चित्तानुपस्सना १८

धम्मानुपस्सना नीवरणपब्बं २०

धम्मानुपस्सना खन्धपब्बं २२

धम्मानुपस्सना आयतनपब्बं २४

धम्मानुपस्सना बोज्झङ्गपब्बं २८

धम्मानुपस्सना सच्चपब्बं ३०

दुक्खसच्चनिद्देसो ३२

समुदयसच्चनिद्देसो ३६

निरोधसच्चनिद्देसो ३८

मग्गसच्चनिद्देसो ४२

सतिपट्ठानभावनानिसंसो ४६

विपश्यना साहित्य ५०

विपश्यना साधना केंद्र ५३

अत्तदीपा ततो होथ, सतिपट्ठानगोचरा।
भावेत्वा सत्तबोज्झङ्गे, दुक्खस्सन्तं करिस्सथ॥

– महापजापतिगोतमी थेरी

(स्मृतिप्रस्थान की गोचरभूमि में रमण करते हुए अपने द्वीप स्वयं बनो। तुम सात बोध्यंगों की भावना कर दुःख का अंत कर लोगे।)

महासतिपट्ठानसुत्त

[**सूचनाः** यह पुस्तिका सतिपट्ठान-शिविर के साधकों के उपयोग के लिए उपलब्ध करायी जा रही है। कृपया शिविर समापन के बाद इसे व्यवस्थापक के पास जमा करा दें।

'महासतिपट्ठानसुत्त' की विस्तृत **समीक्षा सहित** मूल पुस्तक बिक्री के लिए "बिक्रय-स्थान" पर उपलब्ध है। साधक वहां से खरीद सकते हैं।]

महासतिपट्ठानसुत्तं – मूल पाठ

एवं मे सुतं– एकं समयं भगवा कुरूसु विहरति कम्मासधम्मं नाम कुरूनं निगमो। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि– "भिक्खवो"ति। "भद्दन्ते"ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच–

उद्देसो

"एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिदेवानं समतिक्कमाय, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, ञायस्स अधिगमाय, निब्बानस्स सच्छिकिरियाय, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना।

"कतमे चत्तारो? इध, भिक्खवे, भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं। वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं; चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं; धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं।

[उद्देसो निट्ठितो]

महासतिपट्ठानसुत्त – भाषानुवाद

ऐसा मेरे द्वारा सुना गया। एक समय भगवान कुरु प्रदेश में 'कम्मासधम्म' नाम के कुरुओं के निगम में विहार करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया - "हे भिक्षुओ!" उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रत्युत्तर दिया - "भदंत!" (इस पर) भगवान ने यह कहा –

उद्देश

"भिक्षुओ! ये जो चार स्मृतिप्रस्थान हैं वे सत्त्वों की विशुद्धि, शोक और क्रंदन का विनाश, दुःख और दौर्मनस्य का अवसान, सत्य की प्राप्ति (और) निर्वाण का साक्षात्कार – इन सब के लिए अकेला मार्ग है।

"कौन से चार? भिक्षुओ! यहां (कोई) भिक्षु –

(साढ़े तीन हाथ के काया-रूपी) लोक में राग और द्वेष को दूर कर, श्रमशील, स्मृतिमान और संप्रज्ञानी बन, काया में कायानुपश्यी होकर विहार करता है;

(साढ़े तीन हाथ के काया-रूपी) लोक में राग और द्वेष को दूर कर, श्रमशील, स्मृतिमान और संप्रज्ञानी बन, वेदनाओं में वेदनानुपश्यी होकर विहार करता है;

(साढ़े तीन हाथ के काया-रूपी) लोक में राग और द्वेष को दूर कर, श्रमशील, स्मृतिमान और संप्रज्ञानी बन, चित्त में चित्तानुपश्यी होकर विहार करता है; (और)

(साढ़े तीन हाथ के काया-रूपी) लोक में राग और द्वेष को दूर कर, श्रमशील, स्मृतिमान और संप्रज्ञानी बन, धर्मों में धर्मानुपश्यी होकर विहार करता है।

[उद्देश संपूर्ण]